

जैसे पके हुए फलों को गिरने के सिवा कोई भय नहीं वैसे ही पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा कोई भय नहीं. - वाल्मीकि

संपादकीय

राजनीतिक प्रचार में बच्चों का इस्तेमाल

बच्चों को महत्व देने और उनका इस्तेमाल करने में फर्क है। विडंबना यह है कि राजनीतिक दुनिया में बच्चों की जिंदगी को अहमियत देने से जुड़े मुद्दों पर तो बहुत कम ध्यान दिया जाता है, मगर अक्सर चुनाव प्रचार में उन्हें एक जरिया बना कर भी उपयोग किया जाता है। निश्चित रूप से यह मानवीय संवेदनाओं के नाजुक पहलुओं को धुनाते की तरह है, जिसमें लोग कई बार बच्चों को देख कर किसी मसले पर अपनी राय बना लेते हैं।

जबकि यह भी संभव है कि बच्चों को आगे रख कर कोई व्यक्ति या राजनीतिक समूह अपने वैसे मुद्दों के लिए भी समर्थन हासिल करने की कोशिश कर रहा हो, जिनमें आम लोगों की कोई रुचि न हो या फिर वे उससे असहमत हों। जाहिर है, यह न केवल लोगों की भावनाओं के साथ एक प्रकार का खिलवाड़ है, बल्कि मासूमों का बेजा इस्तेमाल भी है। हालांकि कई राजनीतिक दल या उनसे जुड़े नेता और उम्मीदवार अपने प्रतिद्वंद्वियों पर बच्चों का इस्तेमाल करने के आरोप लगाते रहे हैं, मगर दूसरे स्तर पर वे भी उस तरह के अभियान से परहेज नहीं करते।

इलेक्शन कमीशन ने 'कतई बदरिश्त न करने' की नीति बताई अब लोकसभा चुनाव से पहले निर्वाचन आयोग ने राजनीतिक दलों से कहा है कि वे पोस्टर और पर्चों सहित प्रचार की किसी भी सामग्री में बच्चों का इस्तेमाल 'किसी भी रूप में' न करें। अलग-अलग पार्टियों को भेजे अपने परामर्श में आयोग ने दलों और उम्मीदवारों की ओर से चुनावी प्रक्रिया के दौरान ऐसा करने पर अपने 'कतई बदरिश्त न करने' की नीति के बारे में स्पष्ट किया। दरअसल, भारतीय समाज में बच्चों के प्रति आम लोगों के भीतर भावनाएं और संवेदनाओं को तोड़ना छिपी नहीं रही है।

कई बार किसी पार्टी या उसकी नीतियों से गंभीर शिकायत को बावजूद लोग बच्चों का चेहरा देख कर अनदेखी कर देते हैं। इससे मुद्दों को लेकर भ्रम की स्थिति पैदा होती है, जिसका अन्ध चुनावों में जीत-हार पर भी पड़ता है। इसके समान्तर चुनावी अभियानों में शामिल किए गए बच्चों और उनके मनोविज्ञान पर कैसा असर पड़ता है, इसका ध्यान रखना किसी को जरूरी नहीं लगता। इस लिहाज से देखें तो चुनाव प्रचार में बच्चों का इस्तेमाल किए जाने को लेकर निर्वाचन आयोग के ताजा निर्देश की अहमियत समझी जा सकती है।

'भारत रत्न' में घुली 'चुनावी चमक' के नरैटिव का धुंधला सच

मोदी सरकार द्वारा हाल में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से दो राजनीतिक विभूतियों को सम्मानित करने एलान के बाद एक नरैटिव यह बनाने की कोशिश हो रही है कि इसके पीछे सम्मान और कृतज्ञता का भाव कम और सियासी एंगल ज्यादा है।

दरअसल, लोकसभा चुनाव से पहले शीर्ष पुरस्कारों को इस कवायद के पीछे नीयत भाजपा के पक्ष में वोटों को खींचना है। गौरतलब है कि बीते एक पखवाड़े में देश की दो अजीब सियासी हस्तियों समाजवादी नेता और बिहार के दो बार मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर को पिछड़ी जातियों के सामाजिक राजनीतिक उद्योग के लिए मरणोपरांत तथा भाजपा के वरिष्ठतम नेता और पूर्व



पुरस्कार पर सियासत और चुनाव

इस बार भी इस पुरस्कार की टाइटिमिंग और पात्र चयन के संदर्भ में यह नरैटिव बनाने की कोशिश हुई कि कर्पूरी ठाकुर के रूप में पहली बार देश में किसी अति पिछड़ी जाति के व्यक्ति को सबसे बड़े सम्मान से नवाजा गया है, जबकि आडवाणी के बारे में कहा गया कि कभी हाशिए पर पड़ी भाजपा उन्हीं के भागीरथ प्रयासों से आम दिल्ली के तख्त पर काबिज है और देश के बहुसंख्यक हिंदुओं

की आकांक्षा अयोध्या में राम मंदिर ने आकार ग्रहण किया है। जाहिर है कि इसमें निहित राजनीतिक संदेश यही है कि इन भारत रत्नों के जरिए मोदी सरकार ने बिहार सहित देश के अन्य राज्यों में भी अति पिछड़ी जातियों तथा आडवाणी के माध्यम से कट्टर हिंदुत्ववादी वोटों को साधने की कोशिश की है। माना जा रहा है कि 'भारत रत्न' दिए जाने की खुशी कहीं न कहीं वोटों में तब्दील हो सकती है। अपेक्षा और अनुमान के स्तर पर यह बात सही हो सकती है, लेकिन अगर भारत में पिछले पचास सालों में दिए गए भारत रत्न सम्मानों, इस सम्मान से सम्मानित होने वाली हस्तियों और इस सम्मान की घोषणा के सालभर के अंदर देश में होने वाले लोकसभा और विधानसभा चुनावों के नतीजों

को परखें तो तस्वीर कुछ और ही नजर आती है। ज्यादातर मामलों में भारत रत्न घोषित करने वाली सत्तारूढ़ पार्टी को इसका चुनावी लाभ अपवाद स्वरूप ही मिला है। अगर वो चुनाव जीती भी है तो उसके कारण दूसरे हैं न कि किसी फलों जाति, धर्म, प्रदेश अथवा समुदाय के व्यक्ति को भारत रत्न देने के कारण। इसका सीधा अर्थ यह है कि भारत रत्न जैसा सर्वोच्च पुरस्कार इस सत्ताकांक्षी संकुचित सोच से कहीं ऊपर है और देश की जनता भी अमूमन उसे उसी रूप में लेती है, यह मानकर कि भारत रत्न सुबह मजदूरी करने चले जाते हैं और देश के धुंधले अंकगणित में नहीं तौला जाना चाहिए, भले ही सरकारें इस पुरस्कार के पीछे प्रतिभा के सम्मान के साथ वोटों की गोलेबंदी का अधोषिक्त तड़का लगाने की कोशिश

करती महसूस हों। अगर हम पिछले पचास सालों में घोषित भारत रत्न पुरस्कारों और इस घोषणा के सनिकट लोकसभा व विधानसभा चुनाव के नतीजों का विश्लेषण करें तो कई बातें साफ हो जाएंगी। इस तरह की पहली धुंधली कोशिश देश के पूर्व प्रधानमंत्री और सादगी की प्रतिभूति कहे जाने वाले लाल बहादूर शास्त्री को मरणोपरांत भारत रत्न देने की मानी जा सकती है। तब देश में कांग्रेस की सरकार थी। शास्त्री जी का निधन 1966 में हुआ और 1965 के भारत-पाक युद्ध में भारत की जीत के चलते उन्हें भारत रत्न मरणोपरांत दिया गया। उसके अगले ही साल 1967 में देश में लोकसभा के चुनाव हुए। तब केंद्र में कांग्रेस सरकार थी और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी थीं।

जब हम प्रभु-प्रेम में रंगे जाते हैं, तो हम प्रभु से एकमेक भी हो जाते हैं।

- संत राजिन्दर सिंह जी महाराज

संत राजिन्दर सिंह जी महाराज
स्थान - सावन कूपाल रुहानी मिश्रान, सावन आश्रम, परसंत कूपाल सिंह जी महाराज चौक, खैराना रोड, उदुहरनगर-2
देखें सत्यंघ्न आस्था चौकल पर हर रोज़ सोम - शनि सुबह ८.२० से ८.४० तक

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

लैंगिक भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ ग्रामीण समाज

साल में केवल 6 दिन ही खुलता है ये सीक्रेट आइलैंड

नियामों में कई द्वीप ऐसे हैं जो मशहूर नहीं होते हैं और ना ही उनमें कोई बहुत ही बड़ा या अनोखा आकर्षण होता है, फिर भी एक इस तरह



और इसके अंदर बहुत से संकरे पानी के रास्ते भी हैं। 20वीं सदी की शुरुआत में यह फाउलनेस द्वीप ब्रिटेन के युद्ध विभाग को सौंप दिया गया था, आज यह द्वीप मिलिट्री ऑफ डिफेंस के हवाले हैं और इसका उपयोग कर मिसाइल, बैलैस्टिक टॉरपीडो आदि हथियारों के परीक्षण के लिए होता है लेकिन यहाँ क्या काम होता है, इसके ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट के तहत ब्लासिफाइड कह कर, यह बताया नहीं जाता है। इसके बावजूद ब्रिटेन के लोग छुट्टी मनाने इस द्वीप पर महीने के पहले ही रिविगर को ही यहाँ आ सकते हैं, लेकिन

जरा हट के

जरा हट के

जरा हट के

जरा हट के

जरा हट के

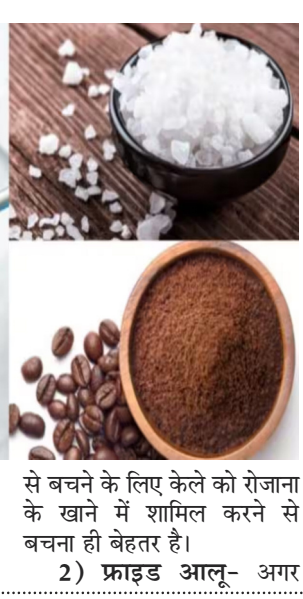
जरा हट के

जरा हट के

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें



किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

किडनी डैमेज करती है खाने की ये 5 चीजें

आज का राशिफल

आज का राशिफल

आज का राशिफल

आज का राशिफल

आज का राशिफल

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज तक कंट्रोल रखता है खाली पेट मेथी के पानी का सेवन

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज तक कंट्रोल रखता है खाली पेट मेथी के पानी का सेवन

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज तक कंट्रोल रखता है खाली पेट मेथी के पानी का सेवन

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज तक कंट्रोल रखता है खाली पेट मेथी के पानी का सेवन

वेट लॉस से लेकर डायबिटीज तक कंट्रोल रखता है खाली पेट मेथी के पानी का सेवन

गुलाब की पंखुड़ियों से निखारें चेहरे की रंगत

गुलाब की पंखुड़ियों से निखारें चेहरे की रंगत

गुलाब की पंखुड़ियों से निखारें चेहरे की रंगत



